P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारतीय स्वतन्त्रता यज्ञ में क्रान्तिकारी संघो, समितियों एवं संगठनों की भूमिका

सचिन कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
डी0ए0वी0 कॉलेज,
मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश,
भारत

सारांश

क्रान्तिकारियों ने जिस महान आन्दोलन को जन्म दिया उसका मुख्य उद्देश्य भारत की पावन धरा को मुक्ति दिलाना था। इस कार्य हेतु क्रान्तिकारियों ने भारत के विभिन्न हिस्सों में क्रान्तिकारी संगठनो एवं गुप्त समितियों को संगठित किया। बंगाल प्रान्त की सक्रिय अनुशीलन समिति तथा युगान्तर समिति, उत्तर भारत में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन आर्मी तथा नौजवान सभा आदि।

मुख्य शब्द : क्रान्तिकारी, क्रान्तिकारी संगठन, भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन।

प्रस्तावना

क्रान्तिकारियों द्वारा गठित समितियों ने सबसे पहले युवाओं को इसमें भर्ती करके व्यायाम, अस्त्र–शस्त्र का प्रशिक्षण देना तथा देश के लिए शहीद हुए अपने वीरों को याद रखना सिखाया ताकि वे ब्रिटिश हुकूमत से उनकी शहादत का बदला ले सकें। वीरों ने इन समितियों और संगठनों में अपनी महत्ती भूमिका निभाई। संगठन के सदस्य हर क्षण देश की आजादी के बारे में ही विचारशील एवं चिंतिंत रहते थे।[1]

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ही क्रान्तिकारी आन्दोलन का आगाज हुआ। उस समय तक देश के वीर नायक देश को आजादी दिलाने के लिए देश के अनेक कोनों में अपना ठिकाना बना चुके थे। इनके ठिकाने मुख्यतः पंजाब, महाराष्ट्र, संयुक्त प्रान्त, बंगाल आदि में थे। इन्होने अपने संगठनों में देश के वीर युवाओं को शामिल किया। क्रान्तिकारी अपनी नीतियों के बल से औपनिवेशिक शासन का अन्त करना चाहते थे, क्योंकि यह वह शासक वर्ग था, जिसने भारतीय जनमानस की रोटी, कपड़ा, घर, जमीन पर अपना कब्जा स्थापित कर लिया था। जो क्रान्तिकारी देश की आजादी की राह में आये थे, उन्हें अपने आस–पास के जीवन का भली–भाँति आभास था।[2] जब वे अपनी समितियों में योजनाओं का निर्माण करते थे तो उनके मस्तिष्क में एक ही उद्देश्य होता था कि ब्रिटिश शासन के चंगुल से भारतीय जनसामान्य को कैसे मुक्ति दी जाये। इसके लिए उन्होंने ब्रिटिश अधिकारियों, कर्मचारियों पर हमला करना प्रारम्भ किया।

स्वामी विवेकानन्द के विचारों से प्रेरित होकर भी भारतीय युवाओं ने भारत के बारे में सोचना प्रारम्भ कर दिया था। इन्हीं के विचारों से स्वाभिमान और आत्मसम्मान का मंत्र मिला। क्रान्तिकारी भी अब इनके विचारों से अपनी सहमति दिखाने लगे थे। तिलक, विपिन चन्द्रपाल, लाला लाजपत राय आदि ने अपने वक्तव्यों से सभी नौजवानों में ऊर्जा का संचार किया और कहा कि वे अपनी विवशता के स्तर से ऊपर उठें तथा सब कुछ माँ भारती पर न्यौछावर करने के लिए आतुर रहें क्योंकि हमारा मुकाबला एक ऐसी शक्ति से है जो हमारे ही संसाधनों पर कब्जा किये हुए है। जिसने हमारा जीवन अमानवीय एवं नरकीय बना दिया है। वह सतत रुप से हमारे ऊपर अत्याचार कर रही है।[3]

भारतीय क्रान्तिकारी अपने संगठनों में यह चर्चा भी करते थे कि हम सब साथियों का मुकाबला सिर्फ अत्याचारी अंग्रेजी शासन से ही नहीं वरन् उनसे भी है जो लोग उन्हें इस शासन संचालन में सहयोग प्रदान कर रहे हैं। जिन्होंने हमारे देशवासियों की हत्याएं की तथा उनके ऊपर अत्याचार किये हैं। इसका उदाहरण हमेशा इतिहास में दिया जाता रहेगा कि जलियांवाला बाग काण्ड के गुनहगार डायर तथा लाला जी की मौत का जिम्मेदार साण्डर्स तथा अन्य घटनाओं से सम्बन्धित सभी अंग्रेज अधिकारियों से बदला लिया गया ताकि शासक के दिमाग में गलतफहमी न हो जाये। सभी हत्याओं का मुख्य कारण व्यक्तिगत नहीं था बल्कि राष्ट्र का प्रतिशोध था क्योंकि उपरोक्त अंग्रेजों ने भारत के महान लोगों पर गोलियाँ चलवाईं, इसलिए इनसे बदला लिया जाना

स्वाभाविक था।[4] इन अंग्रेज अधिकारियों की हत्याओं ने एक प्रेरणा सरीखा कार्य किया। अब भारतीय क्रान्तिकारियों के हौसलों में इतनी वृद्धि हो गयी थी कि वह अब माँ भारती को अंग्रेजी दासता की बेड़ी से मुक्त कराने के लिए आतुर हो चले थे। इस कार्य हेतु वे अपना तन, मन, धन सब कुछ न्यौछावर करने की चाहत रखते थे और उन्होंने अन्त में यह साबित भी कर दिखाया था।

उन्नीसवीं सदी के अन्तिम दशक, भारत में संगठित राष्ट्रीय चेतना एवं राष्ट्रवादी सोच के गवाह रहे हैं। इस समय शिक्षा के उद्भव के कारण एक नए वर्ग का जन्म हुआ जिसमें एक राजनीतिक सोच थी जो यह अनुभव करने लगा था कि कैसे आजादी की लड़ाई को जारी रखने के लिए सघों, समितियों का निर्माण किया जाये और भारत आजाद हो सके। कांग्रेस के उद्भव से पहले अनेक संघों का जन्म भारतीय धरा पर हो चुका था जिन्होंने ब्रिटिश शासन के समक्ष ऐसी मांगे रखीं जैसे– उन्हें राजनीतिक और आर्थिक अधिकार दिये जायें। लेकिन ब्रिटिश शासन ने इनकी माँगों पर कभी कोई ध्यान नहीं दिया क्योंकि वह अपने समकक्ष किसी भी संगठन, संस्था को नही देखना चाहते थे। लेकिन इन्हीं संगठनों में कुछ व्यक्ति ऐसे भी थे जो अपनी मांग दूसरे साधनों से मनवाने में विश्वास करते थे। उनका मानना था कि भीख सिर्फ सामने वालो की दया पर निर्भर करती है ना कि सोच पर। अब कुछ नौजवानों ने मांग की राह को तिलांजलि दे दी तथा क्रान्ति के पथ पर अपने पग बढ़ा दिये और अपने आक्रोश का बदला चुकाने निकल पड़े। अब उन्होंने अपने लिए गुप्त समितियों तथा संघों का निर्माण किया। इस क्रान्ति की धारा को आधुनिक इतिहासकार नवराष्ट्रवाद की संज्ञा देते हैं। गुप्त समितियों और संगठनों के साथ–साथ कुछ संगठन प्रत्यक्ष रुप से भी अपने कार्यों में संलग्न थे जिनमें मूलतः यूथ लीग तथा नौजवान भारत सभा आदि प्रमुख थे।

भारत के विभिन्न प्रान्तों में ये क्रांतिकारी संगठन विभिन्न नामों से विकसित हो रहे थे लेकिन इन सभी का अन्तिम उद्देश्य एक ही था– ब्रिटिश हुकूमत का अन्त करके भारत माता को स्वतन्त्रता दिलाना और आने वाली नस्लों के लिए एक स्वतन्त्र एवं स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण करना।

भारत के विभिन्न भागों में विकसित क्रांतिकारी संगठन एवं गतिविधियां, भावुकता या नौजवानों के गुस्से का प्रतिफल मात्र नहीं थी बल्कि सोची समझी रणनीति थी। विश्व इतिहास इस बात का गवाह है कि जब भी कोई पराधीन राष्ट्र खुले संघर्ष द्वारा अपने को स्वतंत्र कराने में कमजोर या असहाय पाता है तो वह गुप्त संगठनों का सहारा लेता है एवं अपने ऊपर होने वाले अन्याय का जवाब देता है। भारत का क्रांतिकारी आन्दोलन भी इसी संघर्ष की एक कड़ी था।

प्रथम विश्व युद्ध के खत्म होने पर भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व महात्मा गाँधी जी ने अपने हाथों में ले लिया था परन्तु सन् 1922ई0 में गाँधी जी द्वारा अचानक असहयोग आन्दोलन स्थगित कर दिये जाने पर क्रांतिकारियों को बड़ी निराशा हुई। ये वे नौजवान क्रान्तिकारी थे, जो गांधीजी के आहवान पर स्कूल, कॉलेज, नौकरी इत्यादि सब छोड़ असहयोग आन्दोलन के सिपाही हो गये थे, लेकिन इस तरह अचानक आन्दोलन स्थागित होना उनके लिए एक बड़ी घटना थी। अब वे गुलाम अवस्था समाप्त करने के लिए कुछ न कुछ करने को आतुर थे। परिणामस्वरूप संयुक्त प्रान्त, पंजाब एवं देश के अन्य प्रान्तों में क्रांतिकारी संगठन सक्रिय हो गये तथा अनेक नये संगठनों को भी निर्मित किया गया जिससे वे अपनी आजादी की सुबह जल्द से जल्द भारतीयों को उपहार स्वरुप दे सकें।

1922 ई0 में गया (बिहार) में कांग्रेस अधिवेशन हुआ इसमें शचीन्द्रनाथ सान्याल भी शामिल हुए तथा जिसकी अध्यक्षता चितरंजन दास कर रहे थे। लेकिन यहाँ कुछ भारी आश्वासन न मिलने के कारण यहाँ से लौटने के पश्चात् शचीन्द्रनाथ सान्याल ने काशी में ''बंगाल अनुशीलन समिति'' की शाखा को स्थापित किया। समिति के सदस्यों द्वारा गुप्त रूप से भारी मात्रा में अस्त्र–शस्त्र और पैसा इकटठा किया जाने लगा। साथ ही इस समिति में साहसी नवयुवकों को प्रवेश दिया जाने लगा।[5] सन् 1923ई0 की शुरुआत तक शचीन्द्रनाथ सान्याल द्वारा संयुक्त प्रान्त और पंजाब में बीस–पच्चीस क्रान्तिकारियों के आन्दोलन केन्द्र स्थापित किये गये।[6] शचीन्द्रनाथ सान्याल न केवल क्रांतिकारी थे बल्कि वे एक सुपठित विद्वान, नेता, लेखक तथा एक अच्छे वक्ता भी थे। उनके ओजस्वी भाषणों को सुनकर भारतीयों में एक ऊर्जा का संचार होने लगता था। सभी क्रांतिकारियों को एक अखण्ड भारतीय संघ में संकलित करने की पहल शचीन्द्रनाथ सान्याल द्वारा ही की गयी थी। उन्होंने 1923 ई0 के अन्तिम महीने में "हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिऐशन" की स्थापना की। जिसका महान लक्ष्य रखा गया – सशस्त्र और संगठित क्रांति द्वारा भारत में गणतांत्रिक संघ की स्थापना करना।[7] 1917ई0 की रूसी क्रांति का प्रभाव, संगठन की कल्पना पर भी पड़ा जिससे लोगों के मन में विचार आने प्रारम्भ हो गये थे कि जिस प्रकार रुस में जारशाही का अंत हुआ उसी प्रकार भारत भी आजाद होगा इन औपनिवेशिक शक्तियों सें। हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिऐशन ने अपना एक कार्यक्रम और परिनियमावली तैयार कर उसे गुप्त रूप से कलकत्ता के एक छापेखाने में छपवाया। जिसे "येलो पम्पलैट" का नाम दिया गया।[8] इसमें कहा गया कि एसोसिऐशन का मूल उद्देश्य एक नई व्यवस्था स्थापित करना है जिसमें किसी एक मनुष्य द्वारा दूसरे मनुष्य को शोषित नहीं किया जा सके। इसमें केन्द्रीय समिति बनाने और उसके सख्त अनुशासन का पालन करने को भी कहा गया। इसमें दल के पाँच विभाग भी निश्चित किये गये 1. प्रचार 2. लोक संग्रह, 3. अर्थसंग्रह 4. आतंकवाद एवं, 5. शस्त्र संग्रह तथा विदेशों से सम्बन्ध। शचीन्द्रनाथ सान्याल ने दल के उद्देश्यों के सम्बन्ध में विस्तार से लिखा है कि क्रांतिकारी दल का मुख्य ध्येय जितना राष्ट्रीय होगा, उससे भी अधिक अन्तर्राष्ट्रीय होगा।[9]

क्रांतिकारी दल द्वारा भारी मात्रा में क्रय किए गए अस्त्रो–शस्त्रों का पैसा चुकाने के लिए पैसा चाहिए था। इसके लिए सरकारी खजाना लूटने की योजना का प्रारुप मेरठ में स्थित एक अनाथालय में बनाया गया। योजनानुसार जैसे ही रेलगाड़ी लखनऊ के निकट काकोरी

स्टेशन पर पहुँचे तभी सरकारी खजाना लूट लिया जाये। 9 अगस्त 1925ई0 में काकोरी के निकट रेल गाडी को रोककर क्रांतिपथ के सिपाहियों द्वारा सरकारी खजाना लूट लिया गया जिसमें एक व्यक्ति की मौत भी भूलवश हो गयी थी।[10] काकोरी की घटना ने सरकार की सत्ता और शक्ति दोनों को एक खुली चुनौती दी। सरकार द्वारा इस घटना के सिलसिले मे बहुत से व्यक्तियों को गिरफ्तार कर उन पर मुकदमा चलाया गया। यह मुकदमा काकोरी षडयन्त्र केस के नाम से चला। क्रांतिकारी दल के इस शौर्यपूर्ण कार्य तथा क्रांतिकारियों के ऊपर चलाए गए मुकदमों और सजाओं ने जनता में एक प्रेरणा का कार्य किया। शचीन्द्रनाथ सान्याल और योगेश चन्द्र चटर्जी पहले ही गिरफ्तार कर लिये गये थे। फिर भी हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिऐशन की संयुक्त प्रान्त में यह शाखा सक्रिय रही। रामप्रसाद बिस्मिल ने अपने अथक प्रयासों से इस शाखा को कायम रखा। इन्हें भी बाद में गिरफ्तार कर फाँसी दे दी गई। इस संगठन के द्वारा ''अग्रदूत'' नाम की गुप्त पत्रिका निकाली जाती थी जिसमें क्रान्तिकारियों की वीर गाथाओं के बारे में शौर्यपूर्ण वर्णन होता था जिसके सम्पादक मन्मथनाथ गुप्त थे।[11] उत्तर भारत के क्रांतिकारी आन्दोलन में महिलाओं की प्रत्यक्ष हिस्सेदारी काकोरी काण्ड के बाद ही मिलती है। महिलाओं ने भी गुप्त रुप से क्रान्तिपथ के सिपाहियों की मदद की थी और अपनी सहभागिता के द्वारा आजादी की यज्ञवेदी में आहुति अर्पित की।

काकोरी काण्ड से सम्बन्धित वीर क्रांतिकारियों को फाँसी दिये जाने के पश्चात देश भर में तीखी आलोचना हुई। काकोरी की कार्यवाही के पश्चात् अब भारत में मार्क्सवाद, लेनिनवाद एवं क्रांतिकारियों से जुड़े साहित्य का गहन अध्ययन किया जाने लगा। पंजाब में लाहौर का नेशनल कॉलेज क्रांतिकारियों की उपजाऊ भूमि का केन्द्र बन गया। जहां पर वीर नौजवानों को क्रान्ति से जुडी हुई बातों के बारे में विस्तार से बताया जाता था। नेशनल कॉलेज के अध्यापक भाई परमानन्द तथा जयचन्द विद्यालंकार ने अपने अनेक छात्रों को विप्लववाद की ओर उन्मुख किया, जिनमें भगतसिंह, सुखदेव, यशपाल, भगवती चरण वोहरा, सुशीला दीदी आदि प्रमुख थे।[12]

क्रांतिकारियों ने यह अनुभव किया कि बिना समाजवाद की स्थापना के भारत की गरीबी तथा बेरोजगारी दूर नहीं की जा सकती। फलतः क्रांतिकारियों ने सितम्बर, 1928ई0 में दिल्ली के फिरोजशाह कोटला के किले में एक सभा का आयोजन किया और हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिऐशन का नाम बदलकर हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातांत्रिक एसोसिऐशन का गठन किया गया। इसका मुख्य सिपहसालार चन्द्रशेखर आजाद को बनाया गया। जो अपने समय के वीर क्रान्तिकारियों में सबसे अनुभवी थे।[13] इस घोषणा पत्र में बमदर्शन का भी जिक्र किया गया। आगे घोषणा पत्र में कहा गया कि क्रांतिकारियों की मान्यता थी कि देश को आजादी केवल क्रान्ति के रास्ते पर चलकर मिल सकती है क्योंकि इस लडाई में एक और औपनिवेशिक शक्तियाँ और उनके सहयोगी है। क्रान्तिकारियों के साथ भारतीय जनमानस तो है पर फिर भी विदेशी शक्ति आधुनिक अस्त्र–शस्त्र से लैस है। लेकिन यह क्रान्ति फिर भी एक सामाजिक बदलाव लाएगी और एक नयी सामाजिक व्यवस्था जन्म लेगी एवं पुरानी पड चुकी पूंजीवादी व्यवस्था का अन्त हो जायेगा। समाज में व्यापत हर प्रकार के रंग–भेद गरीब–अमीरी समाप्त प्राय हो जायेगी। यह क्रान्ति लाखों करोडो लोगो के लिए एक जीवनदान या वरदान साबित होगी क्योंकि अब सभी संसाधनों पर उनका हक होगा, एक नये राष्ट्र का निर्माण होगा। अब भारतीय लोगो द्वारा ही भारतीयो पर शासन सत्ता स्थापित होगी तथा ओपनिवेशिक शक्ति को वापस जाना होगा।[14] ''मुल्क की वर्तमान दशा से नाराज नौजवान विदेशी अधिकारियों की हत्याये करेगें जालिमों को मारने लगेंगें, आतंकवाद का मूल इसी गुस्से में है। आतंकवाद क्रांति के विकास का एक चरण है, उसे हम एक आवश्यक और अनिवार्य चरण मान सकते है। भयभीत करने वाली गतिविधियां अपने आप में परिपूर्ण नहीं है, बल्कि क्रांति पथ के सिपाही द्वारा की गयी गतिविधियों का मात्र एक अंग है। उसके बिना क्रांति सम्पूर्ण नहीं होगी जो आगे चलकर आतंकवाद क्रांति में परिणित हो गयी और इससे देश में सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक स्वतन्त्रता आयेगी।''

अपनी योजनाओं एवं कार्यशैली को पूर्ण करने तथा अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हम खुलकर कार्य करेंगें। इन सब बातों की चर्चा क्रान्तिकारियों ने अपने घोषण पत्र में की। जब तक आजादी की सुबह प्राप्त नही हो जाती तब तक हमें संगठनों और समितियों का भी सतत निमार्ण करते रहना होगा। क्रान्ति के तौर–तरीको का गुणगान भी उन्होने अपने घोषणा पत्र में किया। इसमें अहिंसा के लिए कोई स्थान नही था क्योंकि अहिंसा से आजादी नही मिल सकती।[15] क्रान्तिकारी दल जो अब तक गुप्त संगठन के रुप में काम कर रहे थे अब उन्होने स्पष्ट स्थिति जनता के सम्मुख रखकर जन–समर्थन प्राप्त करने का अथक प्रयास किया। क्रांतिकारी संगठनों ने देश की युवा पीढ़ी को बहुत गहराई तक प्रभावित किया। वर्ष 1929ई0 में क्रांतिकारी दल द्वारा एक ऐसा महान कार्य किया गया जिससे न केवल भारत का, वरनः सारे मानचित्र के देशो का ध्यान भारत में चलने वाले राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन ने अपनी ओर खीच लिया। अप्रैल 1929ई0 को केन्द्रीय असेम्बली में ''सार्वजनिक सुरक्षा कानून'' पर गर्म बहस चल रही थी। भारतीय जनता इस बिल के विरूद्ध थी लेकिन सरकार इसे बलपूर्वक पास करवाना चाहती थी। लेकिन हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातांत्रिक एसोसिऐशन की मुख्य समिति ने निर्णय लिया कि इस अध्यादेश को रूकवाने तथा ब्रिटिश सरकार को भारतीय जनता की आवाज का मूल्य समझाने हेतु सदन में बम फेंका जाये। यह कार्य भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त के हाथों में सौंपा गया और यह भी निर्णय लिया कि भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त बम फेंकने के पश्चात् वहां से भागें नहीं बल्कि उन्हे अपने आपको पुलिस के द्वारा पकडवाना होगा। अदालत को एक प्लेटफार्म की तरह प्रयोग करके अपने संगठन के उद्देश्य और नीतियो से पूरे भारतीय जनसमुदाय को अवगत कराना होगा ताकि विदेशी शासक भी उनकी बातों पर ध्यान दे सके।[16]

हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिऐशन की एक शाखा पटना (बिहार) में भी थी इसके अतिरिक्त पूर्वी भारत, पंजाब, संयुक्त प्रान्त तथा दिल्ली में भी इसके सक्रिय कार्यकर्त्ता थे। इस संगठन की अधिकतर कार्यवाही पूर्वी भारत क्षेत्र में ही होती रही।[17] इस संगठन में अनेक वीर महिलाएँ भी कार्यरत रही जिनमें कुछ प्रमुख सुशीला दीदी, दुर्गा भाभी, रूपवती जैन, शास्त्री देवी, चारूशीला देवी, मृणालिनी देवी, सुनीति देवी, श्री देवी मुसद्दी, शान्ता और शाकुन्तला, लक्ष्मी देवी, सावित्री, लीला, स्वदेश, प्रकाशवती और लीलावती आदि थी। इन महिलाओं ने क्रांतिकारी संगठन के अन्तर्गत प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से क्रांतिकारी गतिविधियों में महत्वपूर्ण योगदान दिया।[18] ब्रिटिश शासन को हराने में महिलाओं का सहयोग अधिक अपेक्षित था। लेकिन उस समय समाज की महिलाओं को घर से निकलने की कम आजादी थी फिर भी भारतीय वीरागनाओं ने समाज की परवाह किये बगैर स्वतन्त्रता में अपना योगदान दिया।

पुलिस रिपोर्ट के अनुसार मार्च 1926ई0 में भगतसिंह, सुखदेव, यशपाल, भगवती चरण वोहरा, एहसान इलाही और धन्वन्तरि आदि ने मिलकर लाहौर में नौजवान भारत सभा की स्थापना की तथा इस सभा का कुछ झुकाव साम्यवाद की ओर था। पंजाब के वामपन्थी कांग्रेस के नेता जैसे – सैफुददीन किचलु, सत्यपाल, लाला लालचंद फलक, लाला पिंडीदास, केदारनाथ सहगल और प्रमुख साम्यवादी नेता सोहन सिंह जोश का समर्थन और हमदर्दी इनके साथ थी। यह सभा क्रांतिकारी आन्दोलन का एक प्रकार का खुला मंच था। इसका कार्य आम–सभाओं, भाषणों, पर्चो आदि के माध्यम से क्रांतिकारी दल के उद्देश्य तथा उनके विचारो का प्रचार प्रसार करना था। सभा में अधिकतर लोग पंजाब प्रान्त से जुड़े हुए थे। शोषण, दरिद्रता, असमानता आदि की सम्पूर्ण विश्व समस्या पर अध्ययन एवं विचार कर क्रांतिकारी इस नतीजे पर पहुँचे कि भारत की पूर्ण स्वाधीनता के लिए केवल राजनीतिक ही नहीं बल्कि आर्थिक स्वाधीनता भी परम आवश्यक है। सरदार भगतसिंह एवं भगवती चरण वोहरा नौजवान भारत सभा के प्रमुख नेता थे।[19] उस समय समाजवाद की ओर रूझान रखने वाले कांग्रेस पार्टी के प्रायः सभी नौजवान भारत सभा में आ गये थे। सभा के कार्यकर्त्ताओं के राजनीतिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण को परिभाषित करने और वैज्ञानिक भौतिकवाद से परिचित कराने में सर्वेन्टस ऑफ पीपुल्स सोसाइटी के मुखियॉ छबीलदास की विशेष भूमिका रही। नौजवान भारत सभा को क्रांति का अगुवा एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से परिपूर्ण संगठन बनाने में सरदार भगतसिंह की महत्वूपर्ण भूमिका रही।[20] क्रांतिकारी आन्दोलन को सबसे अधिक प्रभावित बोल्शेविक साम्यवादी क्रांति 1917ई0 ने किया। परिणामस्वरूप अप्रैल 1928ई0 में युवाओं की एक बैठक अमृतसर में हुई, जिसमें नौजवान भारत सभा का नया खाका बनाया गया और सभा का उद्देश्य देश में साम्यवादी सरकार की स्थापना करना और समाज के स्वरूप को बदलना रखा गया।[21] क्रांतिकारियों का सोचना था कि उनकी लडाई केवल ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरूद्ध ही नहीं है बल्कि संसार में साम्राज्यवादी व्यवस्था के खिलाफ है। क्रांति शब्द के सम्बन्ध में भगतसिंह ने कहा था कि क्रांति के लिए हिंसात्मक संघर्ष अनिवार्य नहीं है और न ही उसमें व्यक्तिगत हिंसा का कोई स्थान है।[22]

पंजाब प्रान्त में नौजवान भारत सभा द्वारा हर वर्ष अनेक राष्ट्रीय दिवसों का आयोजन किया जाने लगा। जिनमें मई दिवस, काकोरी शहीदी दिवस, करतार सिंह सराभा दिवस, नौजवान बलिदान दिवस तथा जलियांवाला बाग दिवस आदि प्रमुख थे।[23] इन दिवसों को मनाने का उद्देश्य था कि हम अपने शहीदो की शहादतों को न भूले। सभा के संगठनकर्त्ताओं ने बडे साहस और उत्साह से करतार सिंह की पुण्य तिथि मनायी। करतार सिंह वह क्रान्तिकारी थे जिन्हे लाहौर षडयन्त्र केस के सिलसिले में सन् 1915ई0 में फाँसी की सजा दी गई थी। उस समय वे मात्र 18 वर्ष की अल्प आयु के थे। लाहौर के ''ब्रेडलो हॉल'' की आम सभा में करतार सिंह के चित्र को अनावृत किया गया नौजवान भारत सभा के माध्यम से भगत सिंह दूसरे प्रान्तों के साथ स्थायी रूप से सम्बन्ध स्थापित कर रहे थे।[24] जिससे संगठनो के विचारो को पूरे भारत वर्ष में प्रसारित कर सके और अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त कर सके।

सन् 1927ई0 में अंग्रेज सरकार ने संवैधानिक सुधारों हेतु जाँच एवं सिफारिश करने के लिए साइमन आयोग गठित करने का ऐलान किया, जिसमें सभी सदस्य गोरे लोग थे। इस ऐलान से देश में बढ़ते हुए राष्ट्रीय विक्षोभ को एक केन्द्र बिन्दु मिल गया। साइमन आयोग देश के जिन–जिन हिस्सो में गया जनता ने उसका बहिष्कार किया। नौजवान भारत सभा के कार्यकर्त्ता 30 अक्टूबर 1928ई0 में साइमन आयोग के विरूद्ध लाहौर से निकलने वाले विशाल जूलूस की प्रथम पंक्ति में थे। विशाल जुलूस लाहौर रेलवे स्टेशन की ओर बढ़ चला था। जहाँ साइमन आयोग के सदस्य आने वाले थे। काले झण्डों का एक समुन्द्र सा लाहौर को अपने आगोश में समाये हुए था, साइमन कमीशन वापिस जाओ। ''इन्कलाब जिन्दाबाद'' की गर्जना करता हुआ विशाल जुलूस स्टेशन के नजदीक पहुँचने ही वाला था कि पुलिस ने निहत्थे लोगो पर लाठी चार्ज कर दिया। लाला लाजपत राय इस जुलूस का नेतृत्व कर रहे थे, उनके सिर पर लाठियों से प्रहार किया गया।[25] जिससे लाला जी बुरी तरह से अचेत से हो गये। लेकिन उन्होने हिम्मत नही हारी घायलावस्था में ही लाला जी ने एक जोशीला भाषण दिया। ''मै इस मंच से यह कहना चाहता हूँ कि हम पर किया गया प्रत्येक प्रहार ब्रिटिश शासन के ताबूत में एक–एक कील का काम करेगा।

बीसवीं सदी के प्रारम्भिक दशक में गोकुलदास शास्त्री ने बनारस में ''उत्थान संघ'' नामक क्रान्तिकारी संगठन की स्थापना की, जिसकी शाखाएँ पश्चिम तथा मध्य बिहार, संयुक्त प्रान्त (विशेषता पूर्वी, पश्चिमी और दक्षिण अंचल) मध्य प्रान्त के कुछ जिलों तथा पूर्वी पंजाब आदि स्थानों पर फैली थी। उत्तर प्रदेश के पूर्वी क्षेत्र में इसका संगठन शहरों के अतिरिक्त देहातों तक फैला था जो अपनी गतिविधियों से ब्रिटिश शासन को लगातार सघर्षमय स्थिति में रखते थे।

उत्थान संघ की विचारधारा पर शिवाजी की वीरता का मूल प्रभाव था। इसके सदस्य शिवाजी की स्फूर्ति एवं प्रेरणा से प्रेरित होते थे। बलिया (संयुक्त प्रान्त) से इसके द्वारा एक गुप्त साप्ताहिक पत्र ''जागृत भारत'' निकलता था। ''जागृत भारत'' में उत्थान संघ के सामाजिक विचार एवं संघर्ष मार्ग की रूपरेखा पर प्रकाश डाला जाता था। इस संघ का समाजवादी विचारधारा की ओर ज्यादा झुकाव था। वे शोषितों का राज्य चाहते थे तथा उनका सुख ही वांछित था उनका सतत् संघर्ष उन्हीं दरिद्रनारायण की दासता से मुक्ति दिलाने के लिए था। ''उत्थान संघ'' का सम्बन्ध ''हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातांत्रिक सेना'' तथा सेनापति आजाद के साथ बिहार के योगेन्द्र शुक्ल के माध्यम से स्थापित हुआ। इसके बाद ही यें एक दूसरे के नजदीक आये थे और एक दूसरे की विचार धारा से अप्रत्यक्ष रुप से प्रभावित हुए।

11 जनवरी, 1935ई0 में देशराज नामक एक व्यक्ति को अंग्रेज पुलिस ने सन्देह के आधार पर गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तारी के समय उनके पास से कुछ साहित्य, 45 गोलियां तथा एक माऊजर मिली। देशराज की गिरफ्तारी से ''उत्थान संघ'' का पता पुलिस को मिला जिस कारण लोगो को गिरफ्तार किया गया तथा गिरफ्तार लोगो पर सरकार द्वारा बलिया षडयन्त्र केस चलाया गया जिसके अन्तर्गत 12 जनवरी और 23 फरवरी, 1935ई0 के बीच 250 स्थानों पर छापेमारी की गई तथा अनेक युवकों को हिरासत में लिया गया। प्रमुख लोगों की गिरफ्तारी, विशेषकर संगठन के नेता गोकुलदास के पश्चात् ''उत्थान संघ'' का संगठन बिखर गया और मृतप्राय सा हो गया था। जेल से बचे हुए लोग इधर–उधर चले गये, कुछ वापस घर बैठ गये, कुछ जीविकोपार्जन में लग गये तथा अनेक युवकों ने पढाई कार्य प्रारम्भ कर दिया तथा कुछ कांग्रेस पार्टी में सम्मिलित हो गये थे।

इस दल का विवरण इसके नेता गोकुलदास शास्त्री ने इस प्रकार दिया था पंजाब, उत्तर प्रदेश तथा बिहार में यह दल अपना जाल फैला रहा था, और इसका उद्देश्य सफल क्रांति करना था। यह दल डकैती नहीं डालता था। हथियारों के लिए रूपया जोडने में इस दल ने अपनी शक्ति लगा दी थी। आजमगढ़ में इसका हथियार बनाने का एक बड़ा कारखाना था जिसमें रिवाल्वर तैयार किये जाते थे।[26] ताकि ब्रिटिश शासन से आमने–सामने लड़ सके। ब्रिटिश शासन पर उस समय आधुनिक हथियार थे।

उत्थान–संघ के बच्चे हुए जो क्रांतिकारी सक्रिय रह गये थे, वे सब हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातांन्त्रिक सेना में आ मिले तथा उन्होने केन्द्रीय संगठन के निर्माण में अपना योगदान दिया। बाद में उन्हें शीर्ष समिति का सदस्य भी बनाया गया। उन्होंने क्रांति सम्बन्धी समस्त साहित्य और हथियार शीर्ष समिति को सौंप दिये। ये हथियार आगे चलकर पिपरीडीह ट्रेन डकैती में प्रयोग किये गये।[27]

फरवरी, 1929ई0 में कानपुर में श्रीमती मायादास तथा अत्यन्त उत्साही कार्यकर्त्ताओं के अथक प्रयासों से ''महिला संघ'' नामक एक नई संस्था स्थापित की गई जिसका मूल उद्देश्य भारत की महिलाओं को देश के प्रति उनके कर्त्तव्य से अवगत कराना तथा उनकी उन्नति में सहायक होना था। इस संस्था का मूल कार्य सभायें, भाषण और प्रदर्शन करना था।[28] ताकि महिलाऐ अधिक से अधिक संख्या में संगठन से जुडे और आजादी के यज्ञ में अपनी आहुति डाले।

भारतीय क्रांतिकारियों ने यूरोपीय क्रांतिकारी आन्दोलनों की कार्यप्रणाली का गहन अध्ययन किया तथा जार कालीन रुस में गुप्त क्रांतिकारी संगठनों की कार्य–पद्धति से शिक्षा ग्रहण करके हिंसक कार्यवाहियों तथा राजनीतिक हत्याओं को अपने कार्यक्रम में प्रमुख स्थान दिया। क्रांतिकारी दलों द्वारा राष्ट्रीय वीरों एवं शहीदों के चरित्र अभिनय द्वारा मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए जनता में उत्साह जागृत करना था। क्रांतिकारी ब्रिटिश सरकार को प्रदर्शनों और आन्दोलनों द्वारा उलझायें रखकर अपनी योजनाओं को अंतिम रुप देते थे। क्रांतिकारी कार्यकलापों में होने वाले व्यय की पूर्ति चन्दे के द्वारा की जाती थी। आवश्यकता पढ़ने पर लूट द्वारा धन का अर्जन किया जाता था। इस कार्य को राजनीतिक डकैती की संज्ञा दी जाती है। क्रांतिकारियों का मानना था कि चूंकि यह धन समाज हित व देश कल्याण के लिए प्राप्त किया जाता है इसलिए यह कार्य अनैतिक नहीं है क्योंकि इस धन का सदैव प्रयोग भारतीय जनमानस को आजादी दिलाने में ही प्रयोग होता था।

अध्ययन का उद्देश्य

आजादी की बलवेदिका पर भारत के वीर सपूतों ने अपने प्राणों को हंसते–हंसते न्योंछावर कर दिये। ब्रिटिश शासन का विरोध करने हेतु क्रान्तिकारियों द्वारा कुछ संगठनो, समितियों का निर्माण किया और इन संगठनों समितियों का प्रयोग कर ब्रिटिश शासन पर प्रहार किया गया।

इस शोध पत्र में उपलब्ध साहित्यिक साक्ष्यों का गहनता से अवलोकन करने के पश्चात क्रान्तिकारियों द्वारा संचालित संगठनों, संघों, समितियों की विशेषताओं (कार्यप्रणाली) पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

निष्कर्ष

शोध पत्र पर गहनतापूर्वक कार्य करने के पश्चात यह परिणाम प्राप्त हुआ कि हमारे वीर क्रान्तिकारियों ने स्वाधीनता हासिल करने हेतु संगठन, समितियां निर्मित की, जिनमें क्रान्तिकारी अनुशासित रहकर, अंग्रेजों के विरुद्ध अपनी गतिविधियों को संचालित करते थे।

स्वतन्त्रता के लिए क्रान्तिवीरो द्वारा निर्मित संघ, एवं समितियों और संगठनों ने आगामी पीढ़ियों हेतु यह समझाने में सहायक की भूमिका निभाई है कि किस प्रकार क्रान्तिवीरो ने अनुशासित रहकर देश के लिए अपना बलिदान दिया।

अंत टिप्पणी

1. *सेडिशन कमेटी रिपोर्ट, 1919ई0 से*
2. *विश्वामित्र उपाध्याय, विदेशों में भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन, प्रगतिशील जन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1986ई0, पृ0–5*
3. *जयप्रकाश भारती, वन्देमातरम, नई दिल्ली, 1986ई0, पृ023*

4. शीलम वेंकटेश्वर राव, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, 1748 से 1947ई0 तक पृ0–168 शीलम प्रकाशन 5.8.104 महेश नगर नामपल्ली स्टेशन मार्ग हैदराबाद 500001, 1990ई0, पृ0–168
5. व्यथित हृदय, जो जेलों में रहे, प्रकाशक–राष्ट्रभाषा प्रकाशन, नई दिल्ली, 1992ई0, पृ0–77
6. शचीन्द्रनाथ सान्याल, बन्दी जीवन, प्रकाशक–आत्माराम एडं सन्स दिल्ली, 1986ई0, पृ0–285
7. मन्मथनाथ गुप्त, क्रांतिकारी की आत्मकथा, इलाहाबाद, पृ0–156
8. जितेन्द्रनाथ सान्याल, सरदार भगतसिंह, प्रकाशक, फाइन आर्ट प्रिटिंग कोटेज, इलाहबाद, 1931ई0, पृ0–16
9. शचीन्द्रनाथ सान्याल, बन्दी जीवन, प्रकाशक–आत्माराम एडं सन्स दिल्ली, 1986ई0, पृ0–333
10. शीलम वेंकटेश्वर राव, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, 1748 से 1947ई0 तक पृ0–168 शीलम प्रकाशन 5.8.104 महेश नगर नामपल्ली स्टेशन मार्ग हैदराबाद 500001, 1990ई0, पृ0–173
11. विश्वामित्र उपाध्याय, विदेशों में भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन, पृ0–239
12. आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, भारतीय आतंकवाद का इतिहास, प्रकाशक– ऐण्डमन साहित्य मन्दिर कानपुर, 1939ई0, पृ0–344
13. शीलम वेंकटेश्वर राव, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, 1748 से 1947 तक पृ0–175
14. शहीदों को श्रद्धांजलि, अखिल भारतीय स्वतन्त्रता सेनानी संगठन, दिल्ली 1981ई0 से
15. शहीदों को श्रद्धांजलि, अखिल भारतीय स्वतन्त्रता सेनानी संगठन, दिल्ली 1981ई0 से
16. शीलम वेंकटेश्वर राव, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, 1748 से 1947 तक पृ0–178
17. होम पॉलिटिकल डिपार्टमेन्ट, फाइल संख्या –4/64, 1932ई0 एन0ए0आई0, नई दिल्ली
18. आशा रानी व्होरा, क्रांतिकारी महिलाएं, नई दिल्ली, 1986ई0, एवं अयोध्या सिंह, भारत का मुक्ति संग्राम, पृ0–483
19. होम पॉलिटिकल डिपार्टमेन्ट, फाइल संख्या – 130, के.डब्लू. 1930ई0
20. रघुबीर सिंह, भगत सिंह और स्वतंत्रता संग्राम, राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली, 1997ई0, पृ0–84
21. होम पॉलिटिकल डिपार्टमेन्ट, फाइल संख्या – 130, के.डब्लू. 1930ई0
22. शिव वर्मा, क्रांतिकारी आन्दोलन का वैचारिक विकास, पत्रिका–स्मारिका, लखनऊ, 1990ई0, पृ0–8
23. कमलेश मोहन, मिलिटेंट नेशनलिज्म एण्ड द पंजाब, साउथ एशिया बुक, नई दिल्ली, 1985ई0, पृ0–85
24. गोपाल ठाकुर, भगत सिंह (व्यक्तित्व और विचारधारा), नई दिल्ली, 1995ई0, पृ0–8
25. गोपाल ठाकुर, भगत सिंह (व्यक्तित्व और विचारधारा) पृ0–11
26. झारखण्डे राय, भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन, नई दिल्ली, 1981ई0, पृ0–48
27. झारखण्डे राय, भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन, पृ0–51
28. अभ्युदय, 16 फरवरी 1929ई0, इलाहाबाद,